Historicity Research Journal
Volume 2 | Issue 7 | March 2016

Impact Factor : 0.4521(UIF)
ISSN:- 2393-8900

Research Article

''जलवायु परिवर्तनए आर्थिक विकास कारण एवं परिणाम''

सुनिता पन्द्रो

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल म.प्र.

प्रस्तावना –

जलवायु पर प्रभाव और संभावित परिवर्तन से पृथ्वी की जलवायु तेजी से बदल रही है।'' बदलती जलवायु की चुनौती से जूझने के लिए समूचा विश्व निरंतर प्रयत्नशील है। पर्यावरण के दुष्प्रभावों में एक अप्रत्यक्ष रूप बढ़ रहा खतरा पृथ्वी की जलवायु पर पड़ने वाले प्रभाव का है। विभिन्न देशो की सरकारों के मध्य जलवायु परिवर्तन पर बनाये गये ''पैनल'' द्वारा लगाये गये एक अनुमान के अनुसार वर्तमान ''ग्रीन हाउस'' परिणाम की जनक गैसों के कारण पृथ्वी पर तापमान मे प्रति सौ वर्ष १ से ३.५ से तक की बढोत्तरी हो रही है। यद्यपि यह ऊपरी तौर हानिकारक नही प्रतीत होती किन्तु इसके निकट भविष्य में ही कई भयावह परिणाम सामने आ सकते है। विशेषज्ञों के अनुसार- इसमे समुद्र की सतह १५ ६५ सेन्टीमीटर तक बढ़ सकती है। इसके अतिरिक्त विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के भी ध्रुवों की ओर १५० से ५०० कि.मी. तक खिसक जाने की सम्भावना है। समुद्र का जल स्तर एक मीटर बढ़ जाये तो उसमे बंग्लादेश जैसे राष्ट्र के ७० लाख लोग विस्थापित हो जायेंगे कई द्वीप डूब जायेंगें समुद्र का खारा पानी नदियों और तहवत्रीय क्षेत्र में घुस जायेगा और मीठे पानी की आपुर्ति तथा मछली पकड़ने के धन्धे पर भारी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। उक्त पैनल जो आई.पी.सी के नाम से जाना जाता है, के अनुसार पृथ्वी पर बढ़ते तापमान का एक अन्य दुष्प्रभाव सूखे पानी की घटती मात्रा दार्वाग्न आदि के रूप में नजर आयेगा।

साधारण तौर पर तो पर्यावरण का अधिक नुकसान न हो और वह हमारे जीवन के लिए आवश्यक एक आदर्श सुरक्षित रूप से कायम रहे इसकी व्यवस्था जैसा कि आरम्भ में उल्लेख किया गया है एक सहज स्वाभाविक प्रकृति-प्रदन्त संतुलन के अधीन अपने आप ही होती है। सम्भवतः इसे हम सृष्ट्रि के शाखत नियमों मे से भी मान सकते है। हम सृष्ट्रि के शाखत नियमो में से भी मान सकते है। किन्तु पिछली कुछ सदियों से मानवीय विकास के बढ़ते चरण विशेषकर नये नये वैज्ञानिक अविष्कारों और फलस्वरूप आये मशीनी युग के प्रारम्भ के साथ ही यह कहा जा सकता है कि प्राकृतिक संतुलन के नियमो का भी मानव द्वारा अनायास ही उल्लघंन किया जाना भी प्रारम्भ हो गया। फिर भी जब तक कि औद्योगीकीकरण और वैज्ञानिक विकास की गति अत्यन्त तीव्र नही हो गई इसे दुष्प्रभावो के प्रति प्रशासक वर्ग और जनमानस दोनो ही पर्याप्त रूप से सचेत नही हो पाये। यही कारण था कि दिनों-दिन बढ़ते कारखानों, रेल, मोटर, यातायात, व्यक्तियो संस्थाओं द्वारा निरन्तर अपनाये जा रहे अनेकाने नये उपकरणों आदि का प्रभाव बेरोकटोक वातावरण और प्रकृति के विभिन्न अंगो पर पड़ता रहा। न केवल यही नही बढ़ती मॉग और फैलते उद्योगो के कारण प्राकृतिक संसाधनो जैसे कोयला, तेल, अन्य खनिज व निर्माण सामग्री आदि का दोहन भी पूर्वापेक्षा कई गुना बढ़ गया और समूचे पर्यावरण को एक और नदियों वायु, जल आदि के बढ़ते प्रदूषण और दूसरी ओर संसाधनो के दोहन जिससे रिक्त होती वन संपदा से दोहरी मार सहनी पड़ी।

सुझाव

जलवायु परिवर्तन – भारत पर्यावरण परिवर्तन के बारे में संयुक्त राष्ट्र कन्देशन का सदस्य है। इस संस्था का उद्देश्य पर्यावरण के ग्रीनहाउस गैस व सांद्रिकरण के स्तर को इस तरह नियंत्रित रखना है कि मानवीय कारणों से जलवायु व्यवस्था खतरनाक न हो सके। कन्द्रेंशन के सदस्य देश इसके सचिवालय के माध्यम से जिन मामलों पर जानकारी प्राप्त कर सकते है। वे हैं।

१. मॉट्रियल संधि के अन्तर्गत सभी ग्रीन हाउस गैसों को समाप्त करने के लिए एंथरोपेजनिक उत्सर्जन सभी जनिक उत्सर्जन के स्त्रौतों की एक राष्ट्रीय सूची बनाना

२. कन्वेशन को लागू करने के लिए उठाये गए कदमों पर विचार विर्मश ३

३. कन्वेंश के लक्ष्यो का प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह की सूचना उपलब्ध कराना।
४. परियोजना के लिए कार्यान्वयन एजेंसी की जिम्मेदारी मंत्रालय को सौंपना।

विश्य जलवायु सम्मेलन :–

१. संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में ३–१५ दिसम्बर २००७ तक इंडोनेशिया के बाली द्वीप में स्थित नुसादुआ में विश्व जलवायु सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में १९३ देशों के ११००० प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। बाली सम्मेलन के दौरान ग्लोबल वार्मिंग की मौजूद स्थिती पर चिंता व्यक्त की गई तथा जलवायु परिर्वन पर क्योटो संधि के स्थान पर नई संधि लागू करने की सहमति दी गई। नई संधि के अन्तर्गत ही वर्ष २००९ के अंत में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में एक दौर की बाती का प्रावधान किया गया।
२. आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री केबिन रूड ने इस सम्मेलन को संबोधित किया। बैठक में भारतीय शिष्टमण्डल का प्रतिनिधि केंद्रीय विज्ञान मंत्री कपिल सिब्बल ने किया। इस अवसर पर जारी रिर्पोट में कहा गया है कि सभी देशो द्वारा बदली परिस्थितियों को सामान करने के लिए कड़े कदम उठाने आवश्यक है। वैज्ञानिक मत के अनुसार वायुमण्डल मे कार्बनडाई आक्साइट की मात्रा तेजी से बढ़ती जा रही है। अगर इस विषय पर गँभीरता से ध्यान नही दिया गया तो जीव–जन्तुओं, वनस्पति एवं मानव संसाधन के अस्तित्व पर संकट आ सकता है। अतः यह जरूरी है कि आने वाले तीन–चार वर्षो में कार्बन डाई आक्साइड के स्तर को कम किया जाये।?
३. बाली सम्मेलन मे आ.पी.सी. चैनल के रिर्पोट को भी शामिल किया गया जिससे यह कहा गया है कि वायु मण्डल में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा ४५० च्व्ड से आगे नही जानी चाहिए। सम्मेलन में प्रमुख औद्योगिक देशों से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लाने की अपील की गई।

परिणाम :–

१. जलवायु प्रभाव एवं परिर्वतन के कारण पर्यावरण को पहुँच रहे इस भारी नुकसान और फलस्वरूप बढ़ रहे असंतुलन व खतरे के प्रति सामाजिक चेतना का जागरण कंपनी समय पश्चात अर्थात कुछ सीमा तक द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात हुआ जब रसायनिक अस्त्रों की चर्जा आरंभ हो चुकी थी और सक्रिय रूप से इस शताब्दी के हो चुकी थी और सक्रिय रूप से इस शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ माना जा सकता है।
२. औद्यौगिक क्रांति के प्रारंभ से ही प्रभाव क्षेत्र के बढ़ने साथ ही पर्यावरण भी विपरीत रूप से प्रभावित होने लगा।
उदाहरण – यातायात, रेल, मोटर, वायु मण्डल में फैलती कार्बनडाई ऑक्साइड की मात्रा।
३. कारखानो से नदियों आदि में छोडे गये प्रदूषित विषाक्त अवशिष्ट पदार्थ आदि से जनजीवन प्रभावित नही होने लगा तब तक इस दिशा में किये गये प्रयास नगन्य ही थे।
४. पृथ्वी से वायुमण्डल की ऊपरी सतह को धेरे हुए ओजोन की परत धीरे धीरे क्षीण हो रही है। ओजोन वह तत्व है जो सूर्य से आने वाली अत्यन्त तीव्र (अल्ट्रावायलेट) किरणों के प्रभाव की कम कर जीवन के लिए आवश्यक सहनीय स्तर तक लाती है। अतः ओजोन तक पहँचने वाली सबसे अधिक भयावह है। और इसे शेका जाना भी उतना ही आवश्यक है। ओजोन को क्षति पहुँचा रही है। आधुनिक उपकरणों रैफ्री जरेटर, एयर कडीशनर आदि में प्रयोग की जा रही गैस सी एफ सी (क्लोरे फ्लोरो–कार्बन) जो वस्तुतः गैसों का एक योग हैं।

निष्कर्ष :–

जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विभिन्न जीवों के विकास तथा वातावरण की संरचना पर रासायनिक संधटकों के बदलाव के रूप मे हो रहा है। वर्तमान में बढ़ते औद्योगीकरण एवं बढते वाहनो की संख्या से ग्रीन हाउस गैसो के उत्सर्जन में इजाफा हुआ है। औद्योगीकरण एवं बढ़त वाहनो की संख्या से ग्रीन हाउस गैसो के उत्सर्जन में इजाफा हुआ है। औद्योगीकरण नगरीकरण तथा विकास के नवीनतम मॉडल ने आर्थिक संवृद्धि के साथ प्रति व्यक्ति आय तथा सकल राष्ट्रीय आय में निशिचित रूप से वृद्धि की है। किनतु प्रकृति को सीमातीत क्षति भी पहुँचाई है। ओजोन को बढ़ता को सीमातीत क्षति भी पहुँचाई है। आजोन को बढ़ता खतरा और १९८७ का मांट्रियल प्रोटोकाल क्लोरो फ्लरो कार्बन द्वारा ओजोन की परत पहुँचाई जा रही क्षति की खोज के साथ ही पर्यावरण सुरक्षा के प्रति राष्ट्रीय अन्तराष्ट्रीय प्रयत्नो में एक सक्रिय तीव्रता दृष्ट्रिगोचर होने लगी। सदी के मध्य से इस क्षेत्र मे जागृत हुई सामाजिक चेतना व शोध स्तर कार्य को इस प्रकार राजनीतिक धरातर पर नीतिगत निर्णय लिये जाकर पर्यावरण संबंधी सभी समस्याओं के समाधान कारक हल खोजने की दिशा में बल मिला। पर्यावरण संबंधी सबसे पहली अंतराष्ट्रीय गोष्ठी वर्ष १९७२ में स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम में ५ जून को आयोजित की गई। पर्यावरण रक्षा के प्रति सजगता की इस औपचारिक शुरूवात के दिन को अर्थात ५ जून को समूचे विश्व में ''पर्यावरण दिवश'' के रूप में मनाया जाता है।

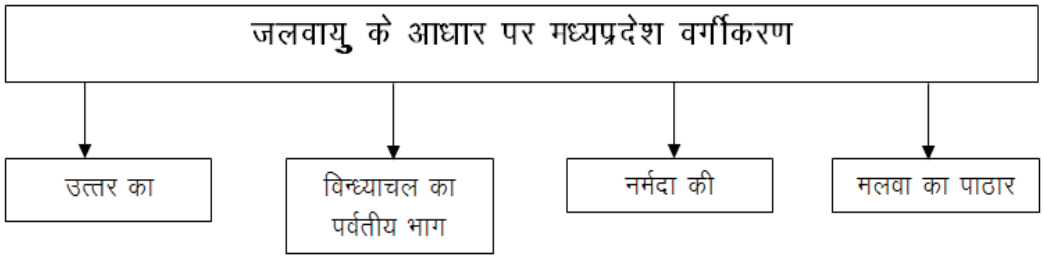

किसी भी क्षेत्र में लम्बे समय तक पाई जाने वाजी तापतान की अवस्था वर्षा का समय तथा मात्रा एवं हवाकी गति की औसत अवस्था वहॉ की जलवायु के निर्धारण के मुख्य तत्व होते है। जलवायु एवं मौसम में प्रति दिन परिवर्तन दृष्टिगत होती है।

१. समुद्र से दूर स्थिति होने के कारण उत्तर का मैदानी भागग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्म और शीत ऋतु में अधिक ठण्डा रहता है।

२. विन्ध्याचल के पहाडी भाग में ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी नही होती और शीत ऋतु मे साधारण ठण्ड पड़ती है, अमरकंटक और पंचमढ़ी, स्वास्थ्यवधर्क स्थान भी इसी भाग में स्थित है।

३. नर्मदा की घाटी के निकट से कर्क रेखा गुजरती है अतः ठण्ड पड़ती है।

४. मालवा के पठार की जलवायु साधरण तथा सम है यहॉ ग्रीष्म ऋतु में न तो तेज गर्मी पड़ती है ना ही शीत ऋतु में अधिक ठण्डी होती है।

मध्यप्रदेश में शीत काल में चक्रवातो से कभी कभी मौसम परिवर्तन से ओले भी गिरते हैं जिससे दिसम्बर जनवरी में होने वाजी वर्षा गेहूँ, चना, मटर, मसूर, अलसी, आदि फसलो के लिए लाभदायक होती है।

''पेड़ पानी और शुद्ध हवा यह जीवन की अनमोलदवा''

संदभ्र गंन्थ सूची

१. उपकार मध्यप्रदेश सामान्य ज्ञान एक दृष्टि में उपकार प्रकाशन आगरा २ (२००१,२००३,२००४,) (पृष्ठ २२ए, २३ए)

२. सामान्य अध्ययन (म.प्र.लोक सेवा आयोग की पाठ्यक्रमानुसार) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी (पृष्ट २६०,२६१)

३. सहायक प्राध्यापक सामान्य अध्ययन (महावीर पब्लिर्शर एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स विश्कर्मा नगर इन्दोर) पृष्ठ ७२,७३

४. प्रतियोगिता दर्पण (समसायिक घटना चक्र) दिसखर २०१५